मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 5, अंक 103, फरवरी(द्वितीय), 2021

तपस्या

राकेश कुमार तगाला

तुम पढ़ते क्यों नहीं?कहते-कहते विमला तंग हो चुकी थी।पर बच्चों पर उसका कोई असर नहीं होता था।पतिदेव कभी बच्चों को डांटने नहीं देते थे।जहाँ मैं थोड़ी सख्त थी,वे इसके विपरीत थे।बच्चों से सारा दिन लाड़- प्यार करते रहते थे। ऑफिस से आते ही बच्चों के साथ खेलना शुरू कर देते थे।उनका रोज का यहीं नियम बन गया था।मेरे मना करने पर भी मानते नहीं थे। मैं कई बार कहती थी, ऑफिस से आकर थोड़ा आराम कर लिया करो। उनका संक्षिप्त सा जवाब होता था।बच्चों के साथ मस्ती करने से मेरी सारी थकान छूमंतर हो जाती है।

इनकी भोली सी मासूमियत देखकर मैं हैरान थी। मैं प्राइवेट स्कूल में टीचर थी।और ये एक मल्टी नेशनल कंपनी में क्लर्क थे।घर में कोई कमी नहीं थी।अपना दो कमरों का फ्लैट था। छोटा परिवार,सुखी परिवार।मैं भगवान को इन सबके लिए धन्यवाद देती थी।पर कभी- कभी पूजा-पाठ करना भी भूल जाती थी।फिर खुद से ही कहती थी,भगवान मेरी परेशानी जानते हैं। वह घट-घट से वास करते हैं।इतना कहकर अपने रोजमर्रा के कामों में जुट जाती थी। घर के काम भी इतने निकल आते थे कि संभलते नहीं थे।ये कभी घर के कामों को हाथ नहीं लगाते थे।और ना ही घर के कामों में कभी टांग अड़ाते थे।मैं इसी से प्रसन्न रहती थी।घर में कोई चिक-चिक बाजी नहीं होती थीं।उस दिन मेरे घर में पहली बार कलह मच गया था। जब मेरे दोनों बच्चों ने अपनी हिंदी की किताब फड़ कर नाव बना दी थी।और वो भी ढेर सारी, पूरे बेड पर सजा कर बैठे थे।मेरा खून खौल उठा था।मैंने दो-चार थप्पड़ लगा दिए थे।और दोनों ही रो-पीटकर सो गए थे।

जब उनके आने का टाइम हो गया,तो मेरा मन विचलित हो उठा था।जब उन्होंने बच्चों को सोता पाया।क्या हुआ,आज मेरी पलटन शांत है?आज पहली बार घर में शांति देख रहा हूँ। बिमला तुम्हारा चेहरा क्यों उतरा हुआ है?कोई परेशानी है क्या?इन बच्चों ने मेरा खून पी रखा है।क्या आज फिर कोई शरारत---- कर दी है?

ये देखो,इनके कारनामें फर्श पर नावों की कतार बनी पड़ी थी।अरे वाह! हमारे बच्चे कितने बड़े कलाकार बन गए हैं? नाव बनाना तो मुझें आज तक नहीं आता।कह कर वह हँस पड़े। तुम्हें पता नहीं विमला हमारे स्कूल में सभी बच्चें नाव बनाते थे। पर मैं कभी नाव नहीं बना

पाया।मैं खुद पर खीझ उठता था। जब मैं अपने दोस्तों से कहता था, नाव बनाने के लिए तो वे बदले में मेरी कलरफुल ड्राइंग के पन्ने मांगा करते थे।दो-दिन में ही मेरी ड्राइंग खत्म हो जाती थी।और घर पर बहुत डांट पड़ती थी।

बस फर्क इतना था,माँ-बाप तो बचपन में ही गुजर गए थे। भाई-भाभी कुछ कहते नहीं थे।भाभी अगले दिन ही मुझें नई ड्राइंग दिला देती थी। उनका प्यार भरा चांटा मेरे गालों पर पड़ता था,समझने के लिए। मैं बड़ा खुश था कि मुझें कोई पीटता नहीं है।

मैं भाभी का बहुत लाड़ला था। विमला बच्चों को उठा दो, उनके साथ खेलना मुझें बहुत पसंद है। बच्चों ने उठते ही मेरी तरफ नफरत से देखा। उनकी आँखों में गुस्सा साफ झलक रहा था। क्या हुआ मम्मी ने डाँटा तुम्हें?नहीं पापा, बहुत मारा हैं। देखो मेरे गाल लाल हो गए हैं। मैं पति की आँखों से खुद को बचा रही थी। विमला इतना गुस्सा,आप नहीं जानते उन्होंने क्या किया?

दोनों ने अपनी किताबें फड़ कर नाव बना डाली। वह पहले तो थोड़ा हँसे फिर गंभीर हो गए।मैंने पहली बार उनका यह रूप देखा था। उन्होंने दोनों बच्चों के कान पकड़कर डाँटना शुरू कर दिया। डांटना कम, समझाना ज्यादा लगा मुझें।क्योंकि बच्चों के चेहरों पर भय का नामोनिशान नहीं था।बच्चों अगर आपने नाव ही बनानी थी तो अखबारों की बना लेते।आगे से अखबार का ही इस्तेमाल करना। समझे, जी पापा दोनों बच्चें चहक उठे। मैं मन ही मन कर रही थी,क्या यह होता है बच्चों को डाँटना? ये तो इनको बढ़ावा दे रहे थे। आप बच्चों पर सख्ती किया करो। इनका पढ़ने में बिल्कुल भी ध्यान नहीं है।अगर इनकी नींव कमजोर रह गई तो भविष्य में बड़ी परेशानी होगी। आप समझ रहे हैं ना,मैं क्या कह रही हूँ?

हाँ,विमला तुम चिंता ना करो।अब मैं भी इन पर ध्यान दिया करूँगा। मन थोड़ा आश्वस्त हुआ था।रोज की तरह आज भी मैं स्कूल में लेट थी।सामने एक लड़की खड़ी थी। उसने मुझें गुड मॉर्निंग कहा,साथ ही सवाल भी किया।मैडम,आठवीं कक्षा कौन सी है? न्यू एडमिशन बेटा। जी मैम, उसने मेरे हाथ में एक पर्ची पकड़ा दी।उस पर लिखा था,क्लास इंचार्ज,विमला।चलो बेटा, मैं ही विमला मैम हूँ।ओके मैम वह मेरे पीछे-पीछे चल रही थी।उसका चेहरा कुछ जाना-पहचाना लग रहा था।फिर मैंने खुद को ही नकार दिया था। यह कैसे हो सकता है?

बीस साल पहले की घटना मेरी आँखों के सामने घूम गई। मेरे मायके में एक बाई काम करने आती थी। बाई के आने का कारण,माँ का एक पैर टूट गया था। वह सीढ़ियों से फिसल गई थी। डॉक्टर ने उन्हें कुछ महीने बिस्तर पर रहने के लिए कह दिया था। पापा ने बाई से कह दिया था।आप इनकी देखभाल करे,घर का कामकाज संभाल ले।पैसों की चिंता ना करें,जी साहब।

बस एक ही परेशानी है, मेरी बेटी नीला! साहब मैं उसे घर पर अकेली नहीं छोड़ सकती।अगर आप हाँ कहे तो---हाँ क्यों नहीं,आप उसे साथ लेकर आ सकती हैं?वह भी हमारे बच्चों के साथ खेल लिया करेगी।जी साहब,आप चिंता ना करें। अगले दिन बाई के साथ एक सांवली सी लड़की थी। उसके बाल उलझे हुए थे।पुरानी सी सलवार कमीज पहने थी। वह रंग उस पर

बिल्कुल नहीं जच रहा था।वह पागलों की तरह हमारी तरफ देख रही थी।
उसकी आँखे बहुत सुंदर थी,मोटी-मोटी खूब मोटी।इस लड़की को देखकर सहज हीं उसका चेहरा मेरी आँखों के सामने आकर खड़ा हो गया था।उसका नाम नीला था।वह बड़ी कमाल की थी!उस समय उसकी उम्र 14- 15 साल जरूर होगी।वह हमसे पांच-छह साल बड़ी थी। बचपन मैं बड़ी अलसी थी।पढ़ने के नाम पर छिपती फिरती थी।
छोटी थी, इसलिए पूरा परिवार मेरा लाड़ करता था। मैं इसी का फायदा उठाती थी। थोड़ा सा कोई डांट दे,बस मोटे-मोटे आँसू निकाल देती थी।पर नीला मुझें बहुत प्यार करती थी। मैं उस समय तीसरी कक्षा में पढ़ती थी। नीला मेरी रंगीन किताबों को देखकर चहक उठी थी। पर हाथ लगाने की हिम्मत नहीं करती थी।माँ का रोज का नियम था। बिस्तर पर पड़े-पड़े ही हमें पढ़ती थी।हिलना मना था,पर वह हमारी पढ़ाई में किसी किस्म की कोताही नहीं बरतना चाहती थी। बाई ने एक दिन मेरे पापा से प्रार्थना की। साहब, मैडम से कहिए ना दो अक्षर नीला को भी पढ़ा दिया करें।अरे तुम ही कह दो मैडम से। नहीं साहब,मुझें मैडम से बड़ी हिचक लगती है। वह बड़ी रोबदार है।अरे नहीं,आओ मेरे साथ। सुनती हो, विमला की माँ,बाई कुछ सहयोग चाहती है।हाँ-हाँ बोलो क्या कहना चाहती हो?
मैडम जी,नीला को भी थोड़ा बहुत पढ़ना-लिखना सिखा दो। ठीक है, कल से वह भी विमला के साथ बैठकर पढा करेगी,जी मैडम!नीला की माँ का चेहरा खुशी से चमक रहा था।वह बार-बार माँ का आभार व्यक्त कर रही थी।पापा ने बाई से कहा,और कोई सहयोग।बाई ने ना में सिर हिला दिया, और चली गई।
अगले दिन से नीला का भी पढ़ने का कार्यक्रम शुरू हो गया। उसने मात्र चार दिन में स्वर-व्यंजन का ज्ञान सीख लिया।वह प्रतिदिन आगे बढ़ती जा रही थी।उस दिन से वह माँ का बहुत ख्याल रखती। भाग-भाग कर काम करती। सारा दिन उनके आस-पास घूमती रहती। शाम को पढ़ने बैठ जाती थी। जल्दी ही वह हिंदी पढ़ना सीख गई।माँ ने उसे पहाड़े,गिनती सब सिखा दिए थे।
वह एक अच्छी शिष्या साबित हो रही थी। पापा भी उसकी बुद्धि पर हैरान थे।वह हर पाठ को जोर-जोर से पढ़ती थी।जल्दी ही वह पाँचवी की किताबें पर आ गई।एक दिन माँ हमारी पुरानी किताबें रद्दी वाले को बेच रही थी।नीला बड़ी गौर से रद्दी वाले को देख रही थी। वह कुछ कहना चाहती थी।पर चुप थी,पापा ने उससे पूछा,नीला क्या तुम्हें किताबें चाहिए?जैसे उसके मन मुराद पूरी गई हैं।पापा ने रद्दी वाले से कहा,यह जो भी किताब लेना चाहें,इसे लेने दो।पापा यह देखकर हैरान थे कि नीला ने सारी किताबें हाथों में उठा ली। नीला, क्या तुम सारी किताबें लेना चाहती हो?जी सहाब,पर बेटी ये बहुत पुरानी है।
साहब, यह तो ज्ञान का भंडार है।पापा ने रद्दी वाले से कहा, तुम जाओ भाई।सारी किताबें हमारी बेटी को चाहिए।रद्दी वाला मुँह बनाता हुआ चला गया। जैसे उसकी दिहाड़ी खराब हो गई हो। कितना प्यार था नीला को किताबों से?माँ नीला की पढ़ने की भूख देखकर हैरान थी।माँ,पापा से अक्सर कहा करती थी। देखो नीला,के पास कोई साधन नहीं है। पर उसमें

लग्न की कमी नहीं हैं।पापा कहते थे,देखना यह लड़की एक दिन बहुत कामयाब होगी। पर उसे सहयोग की जरूरत है, कौन उसका सहयोग करेगा?
अब माँ चल-फिर सकती थी।माँ ने बाई से कहा,अब हम नीला से मिलने तुम्हारे घर आया करेगे।जी मैडम,बाई ने सिर हिलाया।मैंने भी आज पापा-मम्मी के साथ जाने जिद की। इसे भी ले चलो, क्या फर्क पड़ता है?ये नीला को बहुत पसंद करती है।नीला झुग्गी में रहती है।चारों तरफ झुग्गियां दिखाई दे रही थी।सड़क दोनों तरफ से गंदगी से अटी पड़ी थी।बाई आगे-आगे चल रही थी, हम उसके पीछे-पीछे चल रहे थे।बाई एक झुग्गी के सामने ठहर गई। और हमें अंदर आने के लिए कहा, अंदर का दृश्य देकर हम हैरान रह गए। पूरी झुग्गी चमक रही थी।एक पुरानी मेज पर किताबों का ढेर था।नीला कुछ लिख रही थी।
हमें देखकर वह उठ खड़ी हुई।उसने मम्मी-पापा के चरणों को हाथ लगाया। पापा ने कहा, तुमने तो पुरानी किताबों को कवर करके नई कर दिया है। शाबाश नीला! साहब, यह सब आपकी ही कृपा है। आप के सहयोग से ही मुझें ज्ञान मिल रहा है।बाई,तुम बड़े भाग्यशाली हो।जो तुम्हारी बेटी को पढ़ने का इतना चाव हैं।यह एक दिन जरूर कामयाब होगी। साहब यह तो पता नहीं,पर एक खुशखबरी है।नीला का रिश्ता पक्का कर दिया।
दो महीने बाद इसकी शादी है। घर बार ठीक है,बिहार में शादी करूंगी,अपने रीति- रिवाज के अनुसार। साहब आपको जरूर बुलाती,पर।कोई बात नहीं। नीला पढ़ना मत छोड़ना,जी साहब।अब बाई का हमारे घर आना-जाना भी कम हो गया था।पापा का तबादला भी दूसरे शहर में हो गया था। हम नए शहर में आ गए थे।अतीत पीछे छूट गया था।समय भागता रहा,मेरी शादी हो गई थी। पापा नहीं रहे थे।समय बड़ी तेज गति से दौड़ रहा था।पर नीला का चेहरा आज भी मुझें याद था।उसकी लगन,परिश्रम से मैं बहुत प्रभावित थी।और दुखी भी थी कि मेरे बच्चे किताबों का सम्मान नहीं करते।
घर पहुंची तो पतिदेव घर पर ही थे। आज आप जल्दी आ गए। आज हमारी कंपनी की सीईओ के घर पार्टी है। सभी को बुलाया है। बच्चों को अच्छे से तैयार करना। आप चिंता ना करें। किस समय चलना है? शाम सात बजे,रात का प्रोग्राम है।इस बहाने घूमना भी हो जाएगा। तुम्हें हमेशा शिकायत रहती है ना,कि हम कहीं बाहर नहीं जाते। मैं बहुत उत्साहित थी,चलो आज घूमने का मौका तो मिला।हम टैक्सी में बैठकर पार्टी में पहुंच गए। वहां काफी भीड़ थी।मेरे पति ने हमें एक तरफ बिठाया और कोल्ड-ड्रिंक देकर,मैडम से मिलने चले गए। मुझें सामने से एक महिला आती दिखी। साथ ही वह लड़की थी।जो मेरे विद्यालय में न्यू ऐडमिशन थी। गुड इवनिंग मैडम, मैंने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। मैं उन्होंने पहचानने का प्रयास कर रही थी। तभी मेरे पति ने आकर कहा,विमला ये हमारी कंपनी की सीईओ नीला जी। नीला ने मुझें देख कर कहा, क्या मैं आपको जानती हूँ?एक बार फिर,अतीत की यादों की परत खुल गई।क्या आप माथुर सहाब की बेटी विमला हो?जी आप!
मैं आपकी बाई की बेटी नीला हूँ, विमला जी।नीला की बेटी एकदम बोल उठी, मम्मी यही है विमला, जिनके परिवार के सहयोग की बातें आप हमेशा करती हैं।विमला मैडम हमारे घर

बहुत सी किताबें है। जो आपने मम्मी को दी थी। विमला और उसके पति बड़े हैरान थे। हम नीला की तपस्या पर मंत्र-मुग्ध थे।अब मेरी बारी थी,सम्मान करने की।नीला दीदी,यह हमारे सहयोग से नहीं। आपकी रात-दिन की गई तपस्या का फल है।आपने साबित कर दिया,साधनों से ज्यादा लग्न महत्वपूर्ण होती।माँ,अक्सर कहा करती थी। एक दिन आप अवश्य कामयाब होगी। साहब और मैडम मुझें बहुत याद आते हैं। आज भी मेरा मस्तक उनके सामने श्रद्धा से झुक जाता है।

मेरे बच्चे भी बोले उठे,नीला मैडम। हम भी तपस्या करेंगे ताकि आप तरह सफल हो सके।नीला ने मेरे बच्चों को गोद में भर लिया।मैडम नहीं,मौसी बोलो! विमला मन ही मन कह रही थी। ऐसी तपस्या को शत-शत नमन।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें